हृदय और धड़कन

वर्ष-3, अंक-30, जून 20, 2012

CIMS®
Care Institute of Medical Sciences

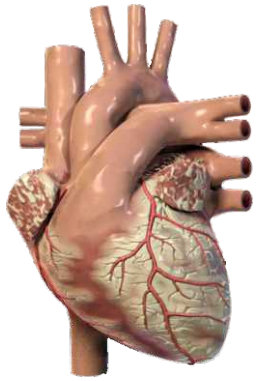

Price Rs. 5/-

कार्डियोलॉजिस्ट

डॉ. अनिश चंदाराणा +91-98250 96922
डॉ. अजय नाईक +91-98250 82666
डॉ. सत्य गुप्ता +91-99250 45780
डॉ. जोयल शाह +91-98253 19645
डॉ. गुणवंत पटेल +91-98240 61266
डॉ. केयूर परीख +91-98250 66664
डॉ. मिलन चग +91-98240 22107
डॉ. उर्मिल शाह +91-98250 66939
डॉ. हेमांग बक्षी +91-98250 30111

कार्डियक सर्जन

डॉ. धीरेन शाह +91-98255 75933
डॉ. धवल नायक +91-90991 11133
डॉ. दीपेश शाह +91-90990 27945

पिडियाट्रिक और स्ट्रकचरल हार्ट सर्जन

डॉ. शौनक शाह +91-98250 44502
डॉ. आशुतोष सिंघ +91-82380 01976

वास्क्युलर और एन्डोवास्क्युलर सर्जन

डॉ. सृजल शाह +91-91377 88088

कार्डियक एनेस्थेटिस्ट

डॉ. निरेन भावसार +91-98795 71917
डॉ. हिरेन धोलकिया +91-95863 75818
डॉ. चिंतन शेठ +91-91732 04454

पिडियाट्रिक कार्डियोलॉजीस्ट

डॉ. कश्यप शेठ +91-99246 12288
डॉ. मिलन चग +91-98240 22107

निओनेटोलोजीस्ट और पीडियाट्रीक इन्टेन्सीवीस्ट

डॉ. अमित चितलीया +91-90999 87400

कार्डियाक इलेक्ट्रोफिजियोलोजीस्ट

डॉ. अजय नाईक +91-98250 82666

अवरुद्ध नलियों का इलाज : ऑपरेशन

पहले बताए अनुसार हस्तक्षेपी हृदयरोग विशेषज्ञों को (Interventional Cardiologist) जिसे हम मजाक में 'प्लम्बर और इलेक्ट्रिशियन' कहते हैं। इसी प्रकार हृदय के सर्जन को 'सुथार' (Carpenter) कह सकते हैं, क्योंकि वह बीमार दिल को ठोक पीट कर ठीक करता है। बाय-पास ऑपरेशन यह एक प्रचलित शब्द है, और यह कॉरोनरी आर्टरी बाय-पास ग्राफ्ट (सी.ए.बी.जी.) का संक्षिप्त रूप है। हृदय की धमनी के रोग (सी.ए.डी.) के इलाज के लिए जब जरूरत पड़े तब यह शल्यक्रिया करवा लेनी चाहिए। इस शल्यक्रिया को करने से हृदय में रक्तप्रवाह सुधरता है, छाती का दर्द और घबराहट दूर होती है, थकान कम होती है। दवाओं की जरूरत कम पड़ती है, शारीरिक श्रम के लिए कार्यक्षमता में बढ़ोतरी होती है और तंदरुस्ती की अनुभूति होती है। अगर सी.ए.बी.जी. शल्यक्रिया नहीं की जाए तो हृदय की धमनियों का अवरोध घातक सिद्ध हो सकता है।

बायपास सर्जरी

अवरोधों को दूर करने का छोटा रास्ता (बायपास)

सौभाग्य से कभी भी पूरी की पूरी धमनी एक साथ अवरुद्ध नहीं होती है। उसके किसी एक भाग में ही अवरोध होता है। अवरोध के आगे की नली अधिकतर खुली होती है। अवरोध जब उलझन भरे होते हैं और एक से ज्यादा धमनियों में फैला हो तो हृदयरोग विशेषज्ञ बायपास करवाने की सलाह देते हैं। इस शल्यक्रिया में रक्त को रुकावट से दूर ले जाने के लिए एक नया रास्ता बनाया जाता है।

सी.ए.बी.जी. आखिर क्या है?

कॉरोनरी आर्टरी बायपास ग्राफ्ट (सी.ए.बी.जी.) एक बड़ी शल्यक्रिया है, जिसमे अपने शरीर के ही दूसरे किसी भाग से धमनी या / और नसें ले कर बिठाई जाती हैं (जिसे 'ग्राफ्ट' कहा जाता है), जिसकी मदद से हृदय के स्नायुओं को रक्त की जरूरी मात्रा पहुंचाई जा सके। हृदय की सतह के ऊपर इन रक्तवाहिनियों को हृदय की धमनी के अवरोध के बाद वाले भाग के साथ जोड़ दिया जाता है। इस प्रकार रक्त अब इस नये रास्ते से बहने लगता है। इस शल्यक्रिया में काम आने वाली धमनी या नस हाथ, पैर या छाती में से ली जाती है। ऐसी नसों को शरीर में से निकालने पर कोई नुकसान नहीं होता है। बायपास में सामान्यतया पाँव की सेफीनस नस,

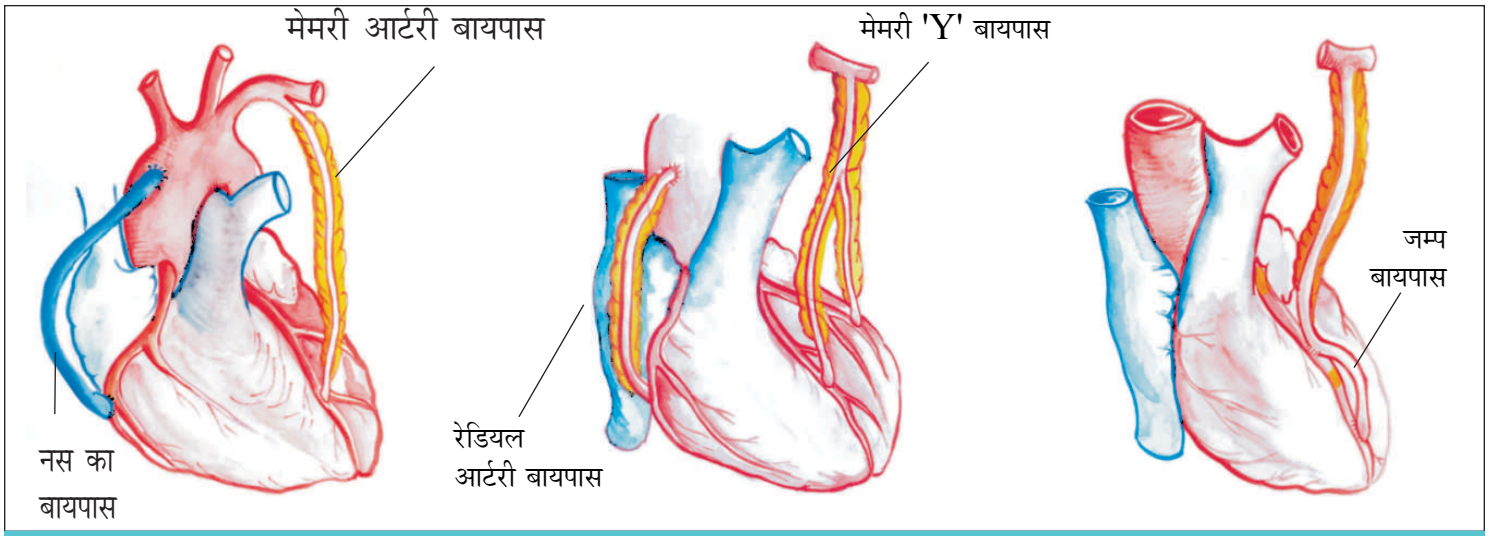

बायपास ऑपरेशन के विभिन्न प्रकार : ग्राफ्ट (धमनियों) को खास जगह पर जोड़ा जाता है।

हाथ की रेडियल धमनी या छाती में से बाँई अथवा दाहिनी इन्टरनल मेमोरी धमनी ली जाती है। ईश्वर का चमत्कार ही है कि बायपास के लिए जो नलियां शरीर से लेकर बायपास किया जाता है उनकी असली जगह को कोई नुकसान नहीं होता है।

क्योंकि रेडियल धमनी हृदयरोग के मरीज में बायपास रक्तवाहिनी की तरह उपयोग में आती है इसलिए विश्वभर में उसे केवल एन्जियोग्राफी के लिए बहुत कम पसंद किया जाता है।

एक दिन मैं ऑफिस में बैठा था और फोन आया 'आपके यहां शान्तिभाई पटेल नाम के कोई मरीज भर्ती है?'

'जी हाँ !'

'उनकी तबियत कैसी है?'

'ठीक है'

'उनको छुट्टी कब देंगे?'

'दो दिन में, आप कोन बोल रहे हैं?'

'मै शांतिभाई पटेल बोल रहा हूं, आपसे यह सब पूछने का समय ही नहीं मिलता इसलिए आपको रूम में से फोन करके पूछ रहा हूं।'

पंप के ऊपर बायपास

हार्ट-लंग मशीन (हृदय और फैंफड़ों की तरह काम करता मशीन) का उपयोग करते हुए बायपास ऑपरेशन किया जाता है। इस साधन से शल्यक्रिया के दौरान हृदय की धड़कनों को बंद करना सम्भव होता है और इसे 'पंप बायपास' कहा जाता है, क्योंकि जब हृदय बंद होता है तब यह हार्ट-लंग मशीन हृदय के बदले अपने शरीर में रक्त को पंप करता है। जब हृदय को इस तरह बंद किया जाता है उस समय सर्जन 'ग्राफ्ट' को हृदय की धमनियों के साथ पक्की तरह से जोड़ देते हैं।

पंप के बिना बायपास

एक अन्य आधुनिकतम तकनीक भी है, जिसमें हार्ट-लंगमशीन का उपयोग नहीं किया जाता। इसमे धड़कते हृदय के साथ ही ऑपरेशन किया जाता है। इससे हार्ट-लंग मशीन से होने वाले नुकसान (Side effects) टाले जा सकते हैं तथा बायपास सुरक्षित व तेज बनता है। पंप के साथ बायपास की तुलना में रोगी जल्दी से ठीक होता है, और बहुत कम मात्रा में रक्त देने की जरूरत पड़ती है। अधिकतर किस्सों में पंप के बिना बायपास करने की सलाह दी जा सकती है।

ऑक्टोपस

सर्जनों के द्वारा उपयोग में आने वाला ऑक्टोपस एक ऐसा यंत्र है जो ग्राफ्ट को जोड़ते समय हृदय के किसी छोटे से भाग को स्थिर रखता है, जिसमें चूसकनलियां (सकर्स) होती हैं, जो ऑक्टोपस की तरह हृदय के साथ चिपक जाती हैं और हृदय को नुकसान नहीं होता है। इस शल्यक्रिया के दौरान हृदय धड़कता रहता है, जिससे पंप बिना बायपास शल्यक्रिया को धड़कते हृदय की बायपास सर्जरी (Beating Heart Surgery) भी कहा जाता है।

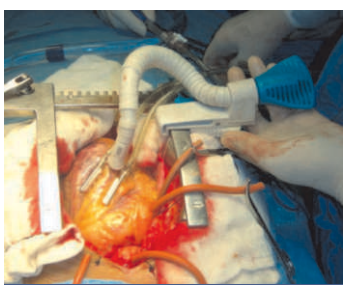
ऑक्टोपस : धड़कते हृदय के कुछ भाग को स्थिर रख ऑपरेशन किया जाता है।

हृदय की शल्यक्रिया के बाद

हृदय की सर्जरी के बाद ठीक होने में कुछ समय लगता है। थोड़ा दर्द व खांसी हो सकती है, पर शल्यक्रिया से होने वाले बड़े फायदे को देखते हुए यह तकलीफों को तो नहीं के बराबर कहा जाता है। हमने देखा कि बायपास शल्यक्रिया किसलिए करनी पड़ती है। अब हम देखेंगे कि इस प्रकार की अतिविशिष्ट शल्यक्रिया के बाद क्या होता है।

बायपास के बाद के विशेष सुधार

बायपास के बाद आई.सी.यु. में रहना पड़ता है

बायपास के बाद रोगी एन्जायना और श्वसन की तकलीफ से मुक्त हो जाता है, और दैनिक क्रियाएं जैसे, चलना, दौड़ना, साइकिल चलाना, तैरना इत्यादि जैसी शारीरिक क्रियाओं के लिए अधिक क्षमता प्राप्त कर सकता है।

सफल बायपास शल्यक्रिया के बाद में होने वाले ये सुधार इतने रोमांचक होते हैं कि इस प्रकार की शल्यक्रियाओं को आधुनिक शल्यक्रिया के इतिहास में सबसे महान सफलता माना जाता है।

करना या नहीं करना

आम लोगों में हृदय की शल्यक्रिया को अभी भी भयानक, खतरनाक, और जटिल माना जाता है। पर असल में ऐसा नहीं है, वास्तव में यह एक सुरक्षित प्रक्रिया (procedure) है। बहुत कम लोग जानते हैं कि सामान्यतया बायपास में १ से २ प्रतिशत तक ही खतरा है, जो अन्य किसी ऑपरेशन जितना ही या उससे भी कम है।

इसलिए हृदय की धमनी के रोग के साथ जीने के खतरे से अच्छा है बायपास करवा लेना, क्योंकि शल्यक्रिया की सफलता की संभावना ९८ से ९९ प्रतिशत रहती है। अधिक महत्त्वकी बात यह है कि शल्यक्रिया के बाद के फायदे हृदयरोग के हमले के निरंतर खतरे की तुलना में कहीं ज्यादा हैं।

२ - ३ दिनो में रोगी बैठकर बात करता है

ऐसा जीवन तो जैसे माथे पर लगातार लटकती तलवार के साथ जीने जैसा है। बायपास के बादमें अचानक हृदयरोग के हमले की लटकती तलवार का डर दूर होता है।

बायपास - सगे संबंधियों के लिए चिंता का कारण

फायदे : कितनी जल्दी?

जैसे ही ग्राफ्ट जोड़ा जाता है, और हृदय को अधिक रक्त मिलना शुरु होता है, बायपास के फायदे मिलना उसी क्षण से शुरु हो जाते हैं। हृदय को अधिक व शुद्ध रक्त की मात्रा मिलने से वह अधिक जोश के साथ काम करना शुरु करता है,

और इस कारण हृदयरोग के हमले का खतरा भी काफी हद तक कम हो जाता है। हृदय के वाल्व के रोगियों को भी शल्यक्रिया के कुछ समय पश्चात् ही फायदे मालूम पड़ने लगते हैं।

अब हम देखेंगे सर्जनों के द्वारा उनके रोगियों के हृदय को नया जीवन दिए जाने के बाद उनके ठीक होने के विभिन्न चरण।

पहला दिन

अधिकतर रोगी शल्यक्रिया के बाद के २ - ३ घंटे में होश में आ जाते हैं। सामान्यतया दर्द कम व सहनीय होता है। रोगी अपने आप आराम से सांस ले सकता है। परन्तु रोगी के अनेक नलियां और लाइनें जुड़ी होती हैं जिससे वो न ज्यादा हिल सकता और न उसे हिलने दिया जाता है।

दूसरा दिन

इस समय तक अधिकतर रोगी अपने आसपास के वातवरण के प्रति पूरी तरह सजग हो चुके होते हैं, और पलंग पर बैठ सकते हैं। सवेरे उन्हें द्रव्य आहार (liquid dite) दिया जाता है। शाम तक उन्हे कुछ हल्की खुराक लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। अधिकतर रोगी समय बिताने के लिए टीवी देखते हैं, पेपर पढ़ते हैं या हल्का संगीत (Light Music) सुनते हैं।

तीसरा दिन

इस समय तक रोगी का रक्तचाप, हृदय की धड़कनें व उसका श्वास सामान्य हो जाता है। छाती में डाली कई नलियों में से आता द्रव्य एकदम कम हो जाता है, और फिर उन नलियों को निकाल दिया

जाता है। इन नलियों के निकाले जाने के बाद रोगी अपने स्वस्थ होते हृदय के साथ अपनी पहली सैर को निकलता है। अगर मरीज की तबियत स्थिर हो तो उसे बाथरूम व लेट्रिन तक स्वयं चलकर जाने दिया जाता है।

चौथे दिन से छुट्टी मिलने तक

इस दिन रोगी को आई. सी. यु. (इन्टेंसिव केयर युनिट) से हटा कर साधारण कमरे में रखा जाता है। अब रोगी इतना स्वस्थ हो चुका होता है वह अपने आप हिल डुल सकता है, थोड़ा घूम फिर सकता है, लैट्रिन तक आ जा सकता है, और खाने के लिए बैठ भी सकता है।

खांसी व शरीर में दर्द ये दो चीजें अगले ३-४ दिन तक परेशान कर सकती हैं, किन्तु छुट्टी मिलने तक तो रोगी भली भांतीचलने लगता है और ३-४ पायदान भी चढ़ और उतर सकता है। अधिकतर रोगियों को शल्यक्रिया के ५-७ दिन के बाद छुट्टी मिल जाती है।

छुट्टी मिलने के बाद

घर जाने के बाद धीरे - धीरे रोगियों को उनके एन्जायना के दर्द से छुटकारा मिलने का एहसास होता है। उनको थोड़ी कमजोरी जरूर महसूस होती होगी, पर सामान्यरूप से वे हर तरह से स्वस्थता महसूस करते हैं।

बायपास के बाद धीरे - धीरे काम की शुरुआत

आने वाले दिनो, सप्ताह, व महिनों में दर्द धीरे - धीरे कम होता है और खांसी बंद हो जाती है। छाती, हाथ व पैर के उपर शल्यक्रिया को घाव शल्यक्रिया के तीन से चार सप्ताह में कम होने लगते हैं।

कुछ झिझक

बहुत से रोगियों को यह सोचते है, कि क्या वो शल्यक्रिया के पहले वाली स्वस्थता पा लेंगे, और क्या पहले की तरह अपने काम को संभाल पाएंगे या नहीं। इसका जवाब स्वाभविक है... हां। वास्तव में अधिकतर रोगी ये सारे काम उनकी शल्यक्रिया से पहले कर सकते थे उससे बेहतर रूप से कर सकते हैं, और इसलिए तो उन पर बायपास किया गया था।

दूध का जला छाछ भी फूंक कर पीता है

यह कहने की जरूरत नहीं है कि बायपास कराने के बाद व्यक्ति को अब अधिक सावधान रहना चाहिए। हृदय जल्दी से सामान्य हो जाए और भविष्य में कोई हृदयरोग हो इसके लिए अपनी जीवन शैली में परिवर्तन बहुत आवश्यक है। बायपास के सभी रोगियों को यह याद रखना चाहिए कि यदि वे अपनी नई बायपास की गई धमनियों को खुली रखने का प्रयत्न नहीं करेंगे तो कुछ वर्षों के बाद यह नई धमनियां भी अवरुद्ध हो सकती हैं।

आदमी कितना स्वस्थ हो सकता है?

इसका आधार, शल्यक्रिया के समय हृदय और रक्तवाहिनियों की स्थिति क्या थी, उस पर रहता है। अधिकतर रोगी दिन में ४५ मिनट से १ घंटे तक चलने जैसी हल्की कसरत कर सकते हैं, और करनी भी चाहिए। तैरने जैसी हल्की कसरतें भी कर लेनी चाहिए। बायपास ऑपरेशन होने के तीन से चार सप्ताह के बाद जातीय सम्बंध पूर्ववत बांधे जा सकते हैं।

बायपास के बाद नई जिंदगी ... आशा की नई किरणें

व्यवसाय या कामकाज कब शुरु किया जा सकता है

शल्यक्रिया के एक सप्ताह बाद में काम शुरु करने में कोई परेशानी नहीं है। फिर भी व्यक्ति को अपने काम करने के समय में नियमितता लानी चाहिए।

आहार, आदतें और वजन

बायपास वाले रोगी का आहार पौष्टिक रहना चाहिए। खुराक के बारे में सलाह लेकर उसका नियमित रूप से पालन करना बहुत जरूरी है। अधिक कोलेस्ट्राल व अधिक चरबी वाली खुराक से दूर रहना चाहिए। उसका सर्वश्रेष्ठ उपाय है, भोजन में अधिकतम हरी सब्जी, फल व फलों का रस दिया जाना चाहिए।

तम्बाकू से खतरों की चर्चा अन्तिम प्रकरण में की गई है। कई लोगों में मान्यता होती है कि शल्यक्रिया के बाद शराब के सेवन से मदद मिलती है। किसी भी अनुसंधान से ऐसा कुछ साबित नहीं हुआ है। जिनका बायपास हो चुका हो ऐसे सब रोगियों को अपने वजन को नियंत्रण में रखना चाहिए।

समाज में जो भी सेवाएं उपलब्ध हैं उसके दो मुख्य प्रकार हैं। पहले प्रकार में किसी से मिलने का समय (Appointment) लेकर जाना पड़ता है।

दूसरे प्रकार की सेवाओं के लिए एपोइन्टमेन्ट नहीं मिलता है, पर लाइन में खड़ा रहना पड़ता है। समाज में एक तीसरे प्रकार की सेवा और है जिसमें एपोइन्टमेन्ट लिया हो फिर भी लाइन में खड़ा रहना पड़ता है। ये सेवा, मतलब डॉक्टर के क्लिनिक की मुलाकात !

डाक्टरी सलाह

शल्यक्रिया के बाद पहले और तीसरे महिने में डाक्टरी जांच के लिए जाने की सलाह दी जाती है। स्ट्रेस टेस्ट (टी.एम.टी.) और इकोकार्डियोग्राम की जांच की जाती है। उसके बाद साल में एक बार 'लिपिड प्रोफाईल' (कोलेस्ट्रोल वगैरह), टी.एम.टी. और इको करवा लेना चाहिए।

आजीवन दवाएं

एस्परिन जैसी कई दवाएं बायपास के बाद आजीवन लेनी पड़ती हैं। एस्परिन के कारण कई बार रोगी के पेट में जलन होती है, फिर भी यह ध्यान से लेनी चाहिए। इन परिस्थितियों में एसिडिटी की दवा भी साथ में लेनी पड़ती है। सम्भवतया खाना खाने के बाद एस्परिन लेने से उससे होने वाली जलन टाली जा सकती है। 'स्टेटिन्स' और कोलेस्ट्रोल कम करने की खास दवा किसी फिजिशियन या हृदयरोग विशेषज्ञ की देखरेख में ली जानी चाहिए।

हमारे एक प्रोफेसर कम, पर बहुत मजाकिया बातें करते थे। एक बार कुछ पत्रकार उनसे सवाल पूछ रहे थे। 'डॉक्टर साहब, इतने वर्षों में आपके हाथ से कोई भूल हुई है?' एक पत्रकार ने पूछा। 'हां ....हां.... बहुत साल पहले मैने एक अमीर आदमी को केवल चार विजिट में ही ठीक कर दिया था !'

डायबिटीज व हाई ब्लडप्रेशर

यह पुराने, और चुपचाप खत्म करने वाले रोगों को तो जीवन भर काबू में रखना चाहिए ! यह याद रखें कि बायपास से डायबिटीज और हाई ब्लडप्रेशर खत्म नहीं होता। संक्षिप्त में, हृदय की बड़ी शल्यक्रिया के बाद रोगी की यथायोग्य देखभाल सबसे महत्त्वपूर्ण है।

सौजन्य **'हृदय की बात दिल से' - लेखक - डॉ. केयूर परीख**
डॉ. धीरेन शाह, डॉ. धवल नायक और डॉ. दीपेश शाह

सीम्स अस्पतालमें जोड़ो को बदलने का केम्प : 1 से 31 जुलाई, 2012

www.cims.me

कोई छुपी शर्तें नही

टोटल नी / हीप रीप्लेसमेन्ट पेकेज (USA approved जोइन्ट)

@ 1.10 लाख से शुरुआत

सामान्य किंमत ₹ 1.40 लाख

यह सर्जरी भारत के श्रेष्ठ सीम्स अस्पताल के ऑपरेशन थीयेटर में की जायेगी

अपने जॉइन्ट का रीप्लेसमेन्ट
अंतरराष्ट्रीय प्रशिक्षित और अनुभवी
जॉइन्ट रीप्लेसमेन्ट सर्जन द्वारा करवाये ।

नी और हीप बदलने का केम्प 1 से 31 जुलाई, 2012

सीम्स अस्पताल : सुबह 9.00 से शाम 5.00 बजे तक
शुकन मॉल के पास, ऑफ सायन्स सिटी रोड, सोला, अहमदाबाद ।

सीम्स क्लिनिक, मणीनगरः दोपहर 1.00 से 4.00 बजे तक
शांत प्रभा हाइट, वल्लभ वाडी के सामने, भैरवनाथ रोड, मणीनगर, अहमदाबाद ।

श्री ऑर्थो केर : सुबह 10.00 से दोपहर 1.00 बजे तक
309, आशीर्वाद पारस, कोर्पोरेट रोड, प्रहलादनगर, अहमदाबाद ।

ऑफर केम्प के समय तक ही मान्य

सीम्स अस्पताल
जॉइन्ट रीप्लेसमेंट टीम

- डॉ. हेमांग अंबानी | +91-98250 20120
  फेलोशीप इन जोइन्ट रीप्लेसमेन्ट, अेटलान्टा, युएसए
- डॉ. चिराग पटेल | +91-98250 24473
  फेलोशीप इन जोइन्ट रीप्लेसमेन्ट, सीडनी, ओस्ट्रेलीया
- डॉ. अमीर संघवी | +91-98250 66013
  फेलोशीप इन जोइन्ट रीप्लेसमेन्ट, ओस्ट्रेलीया, युके और युएसए
- डॉ. अतीत शर्मा | +91-98240 61766
  फेलोशीप इन जोइन्ट रीप्लेसमेन्ट, बेल्जियम, सींगापोर, जर्मनी और युएसए
- डॉ. कार्तिक पटेल | +91-99090 33696
  जोइन्ट रीप्लेसमेन्ट फेलो : ओर्थोपेडीक और ट्रोमा सर्जन

अपॉइन्टमेन्ट के लिये संपर्क करे
+91-79-3010 1200
+91-79-3010 1008
+91-95744 45559

CIMS® Care Institute of Medical Sciences
जोइन्ट रीप्लेसमेन्ट डीपार्टमेन्ट

Shree Orthocare
Strength in Togetherness

सीम्स वेरीकोज़ वेईन्स कार्यक्रम और विशिष्ट वर्कशॉप

5 से 9 जुलाई, 2012 और 31 अगस्त से 1 सितंबर, 2012

वेरीकोज़ वेईन्स सबसे प्रचलित और सबसे ज्यादा नजरअंदाज किये जाने वाली जटिल रोग की संभावना लाने वाली समस्या है जो लाखो भारतीयों की जीवनशैली को असर करती है । निदान पद्धतियों में हाल में हुए विकास और आरएफ एब्लेशन जैसी सारवारलक्षी मोडालिटीज के चलते सीम्स अस्पताल में हमने सीम्स वेरीकोज़ वेईन्स कार्यक्रम तैयार किया है और उनके मरीज़ो का सफलता से ईलाज भी किया है । हम सिर्फ अहमदाबाद के ही नही किंतु सारे गुजरात/राजस्थान के लोगो को वेरीकोज़ वेईन्स के विषय में जानकारी देना चाहते है और लंबे समय से इस समस्या से पीडित मरीज़ो के सफल ईलाज में हमें सहाय की बिनती करते है ।

वेरीकोज़ वेईन्स क्या है ? वेरीकोज़ वेईन्स फूली हुई नसे हैं जो त्वचा की सतह से स्पष्ट रुप से दिखती है और नीले या जामुन रंग में गंठनवाली दोर की, तरह दिखती है । वेरीकोज़ वेईन्स शरीर के किसी भी हिस्से में हो सकती है लेकिन ज्यादातर यह पैर में देखी जाती है ।

स्पाईडर वेईन्स क्या है ? स्पाईडर वेईन्स वेरीकोज़ वेईन्स का हल्का प्रकार है जो वेरीकोज़ वेईन्स से छोटी होती है । यह सनबर्स्ट या मकड़ी के जाले जैसा दिखता है । वे लाल या नीले रंग की होती है और त्वचा की सतह के नीचे चेहरे या पैर पर देखी जाती है ।

वेरीकोज़ वेईन्स किस कारण से होती है ? मोटापा, आनुवंशिक, लंबे समय तक खड़े रहने से, पूर्व डीवीटी, इत्यादि

वेरीकोज़ वेईन्स के लक्षण कौन से है ? पैर में दर्द, खुजली, त्वचा में पिगमेन्टेशन, कोस्मेटिक दाग, एडेमा, वीनस अल्सर

निदान : सघन तबीबी जाँच और उसके बाद वीनस डॉप्लर स्केन

चिकित्सा के विकल्प : **नोन-सर्जीकल :** कम्प्रेशन स्टोकिंग्स और माइक्रोफ्लेवोनोइड्स
सर्जीकल : सर्जीकल स्ट्रीपींग, फोम स्कलेरोथेरापी, रेडियो फ्रीकवन्सी एब्लेशन, मल्टीपल हूक फ्लेबेकेटोमीझ

मरीज़ो को निम्नलिखित निःशुल्क सेवाए दी जाएगी :
1. कन्सल्टैशन ~~₹ 500~~
2. वेरीकोज़ वेईन्स के लिए डॉप्लर ~~₹ 2000~~ (यदि सूचित किया जाए तो)

संबंधित मरीजों के लिए रोजाना जाँच केम्प 15 जून, 2012 से सीम्स अस्पातल में शुरु किया जायेगा । समय दोपहर 2 से सांय 6

अपोइन्टमेन्ट लेना आवश्यक है । फोन : +91-79-3010 1200, 3010 1008

ज्यादा जानकारी के लिये सीम्स के कार्डियोलॉडिस्ट या वास्क्युलर सर्जन का संपर्क करे

डॉ. सृजल शाह	+91-91377 88088	डॉ. गुणवंत पटेल	+91-98240 61266
डॉ. अनिश चंदाराणा	+91-98250 96922	डॉ. केयूर परीख	+91-98250 66664
डॉ. अजय नाईक	+91-98250 82666	डॉ. मिलन चग	+91-98240 22107
डॉ. सत्य गुप्ता	+91-99250 45780	डॉ. उर्मिल शाह	+91-98250 66939
डॉ. जोयल शाह	+91-98253 19645	डॉ. हेमांग बक्षी	+91-98250 30111

आर.एफ. द्वारा वीनस क्लोझर एब्लेशन का उपयोग

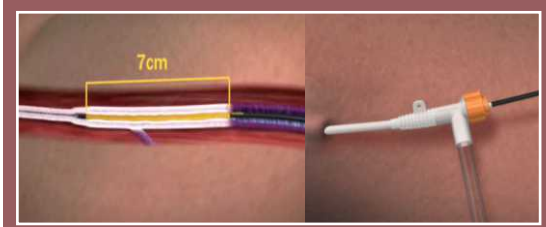

एप्लेशन में केथेटर, नामक पतली और फ्लेक्सीबल नली वेरीकोज़ वेईन में दाखिल की जाती है । केथेटर का शीर्ष रेडियोफ्रीकवन्सी उर्जा (ईसे क्लोझर प्रोसीजर भी कहा जाता है) का उपयोग करके वेरीकोज़ वेईन्स कि दिवारों को गर्म करता है और नस के कोशों का नाश करता है । एक बार नष्ट हो जाने के बाद वह नस में से रक्त गुजरना बंद हो जाता है और आप के शरीर में ही वह अवशोषित हो जाती है ।

स्कलेरोथेरापी

स्पाईडर और वेरीकोज़ वेईन्स के लिए स्कलेरोथेरापी सब से प्रचलित उपचार है । ईस प्रक्रिया में सेलाईन या रासायणिक सोल्युशन का उपयोग होता है जिसे वेरीकोज़ वेईन्स में ईन्जेकशन के द्वारा पसार किया जाता है । जिससे वह हिस्सा सख्त हो जाता है और उस में रक्त भरना बंद हो जाता है । इन नसों के द्वारा आम तौर पर हृदय को मिलनेवाला रक्त अन्य नसों के माध्यम से पहुँचता है । इन्जेक्शन वाली नस समय के चलते संकुचित होकर नष्ट हो जाती है । स्कार टीश्यू भी शरीर द्वारा अवशोषित हो जाता है ।

एम्ब्युलेटरी फ्लेबेक्टोमी :

इस प्रक्रिया में छोटे छोटे छेद बनाकर हूक पसार किया जाता है और इस प्रक्रिया को वेईन स्ट्रीपींग के साथ अथवा उसके बगैर किया जाता है ।

CIMS® Care Institute of Medical Sciences At CIMS... we care
सीम्स अस्पताल: शुकन मॉल के पास, ऑफ सायन्स सिटी रोड, सोला, अहमदाबाद-380060.
एपोइन्टमेन्ट के लिये फोन : +91-79-3010 1200, 3010 1008 (मो) +91-98250 66661 ईमेल : opd.rec@cims.me
फोन : +91-79-2771 2771-75 (5 नंबर्स) फेक्स : +91-79-2771 2770 ईमेल : info@cims.me वेब : www.cims.me

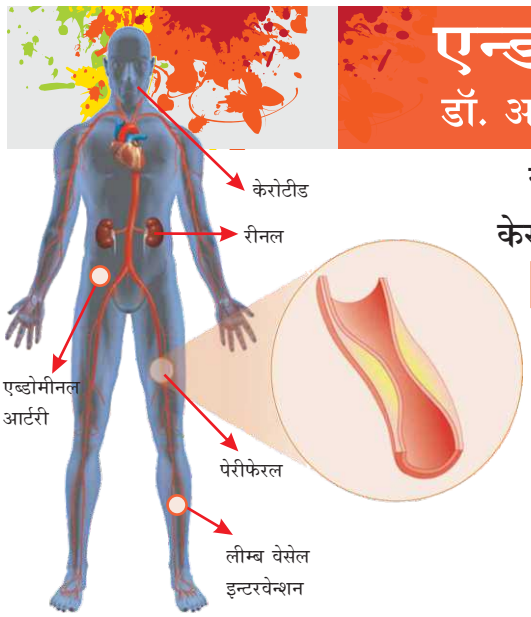

एन्डोवास्क्युलर पेरीफेरल वर्कशोप

डॉ. आशित जैन (युएसए) के साथ | 31 अगस्त से 1 सितंबर, 2012

सीम्स – द हार्ट केर क्लिनिक द्वारा पिछले कुछ सालों में भारी मात्रा में केरोटीड ईन्टरवेन्शन के साथ अनेक एन्डोवास्क्युलर केस सोल्व किये गये है ।

जो मरीज़ निम्नलिखित समस्या से पीडित है :

- केरोटीड आर्टरी स्टेनोसीस
- रेनल आर्टरी स्टेनोसीस
- एक्युट लिम्ब ईस्कीमिया
- क्रीटीकल लीम्ब ईस्कीमयि
- वेरीकोज़ वेईन्स
- डायालिसीस एक्सेस प्रक्रिया
- पल्मोनरी एम्बोलीजम
- थोरासीक आउटलेट सिन्ड्रोम
- युटेरीन फाईब्रोईड्स
- वास्क्युलर माल्फोर्मेशन
- वीनस ईनसफीसीयन्सी और वीनस अल्सर
- क्लोडिकेशन
- एओरटोलिआक ओक्लुझीव डिसीज
- फीमोरोपोप्लीटल डिसीज
- ब्रेकियोसेफालिक आर्टीरीयल डिसीज
- वीनस थ्रोम्बोएम्बोलिक डिसीज
- थोरासिक एब्डोमिनल एरोटीक एन्युरीजम
- मेसेन्टेरिक डिसीज़
- केथेटर आधारीत ईन्टरवेन्शनल फेील्योर
- हिमोडायालिसीस एक्सेस के लिए
- ईन्फ्रापोप्लीटील पेरिफेरल आर्टीरीयल डिसीज़
- ईन्ट्राक्रेनियल आर्टीरीयल स्टेनोटीक डिसीज़
- बर्टीब्रल आर्टीरीयल डीसीज़

मरीजो को निम्नलिखित निःशुल्क सेवाएँ दी जायेगी :

1. कन्सल्टैशन
2. एबीआई
3. डॉप्लर (आर्टीरीयल और वेरीकोज़ वेईन्स - यदि सूचित किया जाए तो)

संबंधित मरीजों के लिए रोजाना जाँच केम्प 15 जून, 2012 से सीम्स अस्पातल में शुरु किया जायेगा । समय दोपहर 2 से सांय 6

अपोइन्टमेन्ट लेना आवश्यक है । फोन : +91-79-3010 1200, 3010 1008

CIMS®
Care Institute of Medical Sciences
At CIMS... we care

सीम्स अस्पताल: शुकन मॉल के पास, ऑफ सायन्स सिटी रोड, सोला, अहमदाबाद-380060.
फोन : +91-79-2771 2771-75 (5 नंबर्स) फेक्स : +91-79-2771 2770 ईमेल : info@cims.me वेब : www.cims.me

वेरीकोज़ वेईन्स

सीम्स अत्याधुनिक VNUS सेगमेन्टल एब्लेशन आरएफ जनरैटर से सुसज्जित है

आरएफ एब्लेशन चिकित्सा

सीम्स वास्क्युलर टीम द्वारा वेरीकोज़ वेईन्स के ईलाज के लिए अत्याधुनिक आउट-पैशन्ट चिकित्सा प्रस्तुत की गई है ।

यह एक मीनीमली ईन्वेसीव सेगमेन्टल रेडियोफ्रीकवन्सी (आरएफ) एब्लेशन चिकित्सा है जिस में नसों की दिवाल में स्थित कोलाजन के संकुचन के लिए समान मात्रा में उर्जा का उपयोग किया जाता है जिससे वह नसें नष्ट होकर बंद हो जाती है । एक बार पैर की नस बंद हो जाए तो रक्त का प्रवाह अन्य स्वस्थ नसों की और बहता है । आरएफ एब्लेशन प्रक्रिया से शीघ्र और आरामदेह रीकवरी मिलती है और रोजाना की जीवनशैली में वापिस जा सकते है । इसके साथ वेरीकोज़ वेईन्स के लुक में भी सुधार आता है ।

~~सामान्य पेकेज ₹ 50,000/-~~ → **विशेष किंमत : ₹ 35,000/-**
(जुलाई और ओगस्ट दोनो वर्कशोप के लिये)

परखे अपने ज्ञान को

(1) बायपास में कितना प्रतिशत ख़तरा रहता है ?

ए. 50 प्रतिशत   बी. 40 प्रतिशत
सी. 30 प्रतिशत   डी. 1 से 2 प्रतिशत

(2) बायपास ऑपरेशन के दौरान कौन से मशीन द्वारा हृदय की धड़कन को बंद करके कुदरती तरीके से पुरे शरीर को रक्त पहुंचाया जाता है ?

ए. हार्ट पंप मशीन   बी. हार्ट लंग मशीन
सी. ओक्टोपस   डी. हार्ट बीट मशीन

(3) कौन से मशीन द्वारा चालु हृदय में बायपास में ग्राफ्ट को जोड़ते समय हृदय के किसी भाग को स्थिर रखा जाता है ?

ए. इसीजी   बी. इको
सी. ओक्टोपस   डी. टीएमटी

(4) सीएबीजी का पुरा नाम क्या है ?

ए. क्रिटीकल एब्लेशन बलुन ग्राफ्ट   बी. क्रिटीकल आर्टरी बोडी ग्राफ्ट
सी. कोरोनरी आर्टरी बायपास ग्राफ्ट   डी. केल्शियम आर्टरी बायपास ग्राफ्ट

सही जवाब के लिये इस पेज को उल्टा किजीए : (1) डी (2) बी (3) सी (4) सी

"Hriday Aur Dhadkan" Registered under RNI No. GUJHIN/2009/28021
Permitted to post at PSO, Ahmedabad-380002 on the 27th to 30th of every month under
Postal Registration No. GAMC-1730/2010-2012 issued by SSP Ahmedabad valid upto 31st December, 2012

If undelivered Please Return to :

CIMS Hospital, Nr. Shukan Mall,

Off Science City Road, Sola, Ahmedabad-380060.

Ph. : +91-79-2771 2771-75 (5 lines)

Fax: +91-79-2771 2770

Mobile : +91-98250 66664, 98250 66668

"हृदय और धड़कन" का अंक प्राप्त करने के लिये : अगर आपको "हृदय और धड़कन" का अंक चाहिए तो इसका मूल्य ₹ 60 (12 अंक) है । इसको प्राप्त करने के लिये केश या चेक/डीडी सीम्स होस्पिटल प्रा. ली. के नाम से और आपका नाम और पुरे पते के साथ हमारी ओफिस हृदय और धड़कन डिपार्टमेन्ट, सीम्स अस्पताल, शुकन मॉल के पास, ऑफ सायन्स सिटी रोड, सोला, अहमदाबाद-380060 पर भेज दे । फोन नं. : +91-79-3010 1059/1060

केर इन्स्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज सीम्स अस्पताल

प्रिमियर मल्टी-सुपर स्पेशियालीटी ग्रीन अस्पताल

अनेक सेवाए एक छत के नीचे

Green Hospital

CIMS®
Care Institute of Medical Sciences
At CIMS... we care

सीम्स अस्पताल: शुकन मॉल के पास, ऑफ सायन्स सिटी रोड, सोला, अहमदाबाद-380060.
एपोइन्टमेन्ट के लिये फोन : +91-79-3010 1200, 3010 1008
(मो) +91-98250 66661 ईमेल : opd.rec@cims.me
फोन : +91-79-2771 2771-75 (5 नंबर्स) फेक्स : +91-79-2771 2770
ईमेल : info@cims.me वेब : www.cims.me

एम्बयुलन्स और आपातकालीन सेवायें : +91-98244 50000, 97234 50000, 90990 11234

मुद्रक, प्रकाशक और संपादक डॉ. हेमांग बक्षी ने सीम्स अस्पताल की ओर से
हरिओम प्रिन्टरी, 15/1, नागोरी एस्टेट, ई.एस.आई डिस्पेन्सरी, दुधेश्वर रोड, अहमदाबाद-380004 से मुद्रित किया और
सीम्स अस्पताल, शुकन मॉल के पास, ऑफ सायन्स सिटी रोड, सोला, अहमदाबाद-380060 से प्रकाशित किया।